रूप देवगुण के काव्य में नारी–विमर्श

सुमन देवी*

टी.जी.टी. हिंदी, कन्या गुरुकुल वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
गैंडा खेड़ा, उचाना, जींद, हरियाणा, भारत

***Email ID**: sumankhatkar383@gmail.com*

Accepted: 07.02.2023 **Published**: 01.03.2023

मुख्य शब्दः रूप, देवगुण, काव्य।

शोध आलेख सार

जिस कुण्ठा, उत्पीड़न को लेकर आधुनिक कविता रही है और आधुनिक परिप्रेक्ष्य को समेटने के प्रयत्न में वह दिनों दिन वैचारिक बौद्धिकता की शिकार बनती जा रही है, श्री रूपदेवगुण के काव्य की रचनाएं प्रायः इससे मुक्त है। इनकी कविताओं में जहां महानगरी जीवन की घुटन तथा आधुनिक परिवेश उभर कर सामने आए हैं वहां मानवीय सवेंदनाएं, निजी भावुक क्षणों का आंकलन और कवि के व्यध्य में जन्म लेता दार्शनिक पक्ष उभर कर सामने आया है। उन्होने अपने काव्य में जीवन और जगत के हर क्षेत्र में लेखनी चलाई है। उनकी कविताएं जहां हमें 'भूत' से अवगत कराती है वहां वर्तमान में सहचरी तथा भविष्य में मार्ग दर्शिका की भूमिका निभाते नजर आती है।

पहचान निशान

**Corresponding Author*

© IJRTS Takshila Foundation, सुमन देवी, *All Rights Reserved.*

परिचय

रूपदेवगुण जी प्रेम के पोषक हैं। लेकिन उनका प्रेम सात्विकता से ओत–प्रोत है। चाहे मानवीय प्रेम हो या फिर प्रकृति प्रेम, कवि की व्यक्तिगत अनुभूति का आधार रहा है। मानवीय प्रेम के अन्तर्गत उन्होने नारी के मां, पत्नी, बहन, बेटी और प्रेमिका के रूप को चित्रित किया है। आज के अंधाधुध पश्चिमीकरण, पूंजीवादी सभ्यता, भ्रष्ट राजनीति तथा बढ़ती हुई स्वार्थपरता में मानवीय मूल्यों को किस प्रकार तहस नहर कर दिया है इसका सफल वर्णन रूपदेवगुण के काव्य में मिलता है। कवि ने गिरते मानवीय मूल्यों के कारण सबंधों के

खोखलेपन को चित्रित किया है तथा बतया है कि ये सारे सबंध विशेषतः माता–पिता, भाई–बहन, पत्नी–पुत्री आदि सारे के सारे सबंध स्वार्थो की दीवार पर टिके हैं। अतः कवि ने अपनी कविताओं में प्रेम, वात्सत्य श्रद्धा, विश्वास, सहयोग तथा संरक्षण जैसी संवेदनाओं के माध्यम से पारिवारिक सबंधों को जोड़ने का प्रयास किया है तथा आर्थिक विषमता के कारण आई आपसी सबंधों की दरार को भरने का प्रयास किया है।

रूपदेवगुण के काव्य में नारी–विमर्श

रूपदेवगुण जी की नारी के प्रति सोच हमेशा श्रद्धामयी रही है, नारी चाहे मां हो या पत्नी हो, बहन हो या पुत्री हो या फिर प्रेमिका हो कवि ने बड़ी सजीवता के साथ नारी के हर रूप को अपनी कविताओं में अभिव्यक्त किया है। रूपदेवगुण के काव्य में नारी–विर्मश विवेचन इस प्रकार हैः–

(क) 'तुम झुठ मत बोला करो' काव्य–संग्रह में नारी–विमर्शः– प्रस्तुत काव्य–संग्रह में कवि ने पारिवारिक सबंधों की झांकी प्रस्तुत की है। कवि ने नारी को एक माता, पत्नी, पुत्री, बहन तथा प्रेयसी के रूप में चित्रित किया है तथा भौतिक चकाचौंध के कारण नारी के इन रूपों में वैर, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, स्वार्थ आदि जैसी भावनाओं पर लेखनी चलाई है आलाच्य काव्य संग्रह की कविताओं में नारी–विमर्श इस प्रकार हैः–

- **तुम झूठ मत बोला करोः–** प्रस्तुत कविता पति–पत्नी की आत्मीय सबंधों का सफल दस्तावेज है। पत्नी परिवार की धूरी होती है। वह अपने स्नेह, वात्सल्य, ममत्व, त्याग, सहनशील स्वभाव से समस्त परिवार को एकता के सूत्र में बांधती है विवाह के बाद जहां वह तरफ ससुराल पक्ष की जिम्मेदारियों को बड़ी तन्मयता के साथ निभाती है। वहां दूसरी तरफ मायके के प्रति उसमें अपार स्नेह व अपनत्व बना रहता है। तभी तो वह कहती हैः–

"मैं कुछ ही दिनों में लौट आऊंगी आखारि मायके के भी फर्ज को निभाना है।"[1]

एक अन्य स्थान पर कवि ने पत्नी के मायके चले जाने पर पति के जीवन के खालीपन को बड़ी सजीवता से प्रकट किया है।

"सबकुछ साथ ले गई हो हंसों का चमकता तार, ढेर सारा प्यार भोजन की मिठास, मिलने का आस जीने का अहसास"[2]

- **आपके बगैर बहुत उदास हैः–** प्रस्तुत कविता डबवाली में हुए भंयकर अग्निकांड जिसमें भिन्न भिन्न स्कूलों के सैंकड़ों बच्चे, माता पिता इस दर्दनाक अग्निकांड में मर गए थे उसका मार्मिक, हृदयस्पर्शी, ज्वलंत चित्र प्रस्तुत करती है। इस दर्दनाक हादसे में मरे एक पिता की बेटी की व्यथा को कवि ने इस प्रकार चित्रित किया हैः–

"पापा कितने दिन हो गए न आप आए न गुड़िया लाए ऐसा मजाक नही करते पापा अच्छा न लाना गुड़िया पर लौट तो आओ आपकी गुड़िया आपके बगैर बहुत उदास है।"[3]

(ख) धूप मुझे बुला रही हैः– प्रस्तुत काव्य–सगंह में कवि ने प्राकृतिक उपादानों के माध्यम से नारी विमर्श का वर्णन इस प्रकार किया हैः–

- **तुम अपना रखो ख्यालः–** संसार की समस्त मानव जाति में मां का दर्जा व रूतबा सर्वोपरि होता है। मां, ममता, स्नेह, वात्सल्य की साकार मूर्ति होती है। कवि ने प्रस्तुत कविता में मां की उपमा नदी से की है। बचपन में मां की शीतल छांह से वंचित कवि मां का समतुल्य नदी से करता है। यथाः–

”मैं जैसी भी हूं, बहुत ठीक हूं
तुम अपना रखा करो ख्याल
मेरी मां जो मेरे बचपन में
मुझे छोड़ कर चली गई थी।
इस जहां में लगता है वो नदी बनकर
फिर आ गई है मेरे जीवन।”[4]

- **एक चुप–सा रोनाः–** पारिवारिक सबंधों के अन्तर्गत पति पत्नी का रिश्ता अतुलनीय होता है। इस रिश्ते में पत्नी की भूमिका सर्वोतम होती है। क्योंकि पत्नी जहां पारिवारिक दायित्वों को निभाती है, वहां अपने पति के हर सुख–दुख में बराबर साथ देती है। एक सच्ची मार्ग दर्शिका बनकर अपने पति का मार्ग दर्शन करती है। नारी के बिना मनुष्य के अधूरेपन की भरपाई कोई नही कर सकता। उदाहरणार्थः–

”मेरी पत्नी ने कहा एक दिन मुझे
जब मैं नही रहूंगी इस दुनिया में
तब तुम्हारा क्या हाल होगा।
उसी समय मैं पक्षी बन गया कुछ देर के लिए
मैं चिल्लाया नही
पर रोता रहा भीतर ही भीतर”[5]

(ग) दुनियाभर की गिलहरियांः– काव्यकार रूपदेवगुण प्राकृतिक हृदय सम्पन्न कवि हैं। उनका समस्त जीवन प्रकृति की गोद में बीत रहा है। यही कारण है कि वे प्रकृति को ही मां, पत्नी, बहन, पुत्री प्रेमिका आदि के रूप में चित्रित करते हैं। प्रस्तुत काव्य संग्रह में कवि ने नारी विमर्श के अन्तर्गत नारी की संवेदनात्मक व भावनात्मक स्थिति का वर्णन इस प्रकार हैः–

- **बिखर गया है आशियानाः–** विदेशी चकाचौंध, पाश्चात्य संस्कृति का आकर्षण ने हमारे देश के युवाओं को अपने जाल में फंसा लिया है। परिणामस्वरूप विदेश को प्रस्थान करने के पश्चात पीछे रह गए बुजुर्गो की दयनीय स्थिति का मार्मिक चित्र एक वृद्धा औरत के माध्यमसे प्रस्तुत कविता में कवि ने इस प्रकार किया हैः–

"एक बुढ़िया आती रहती है मेरे पास
बार–बार दोहराती है, इसी शहर में
रहता है मेरा बेटा और उसका परिवार
मैं अकेली रह रही हूं यहां
खाने को पड़ता है मुझे घर.........।"[6]

- **औलाद जब अच्छी न निकलेः–** प्रस्तुत कविता में कवि ने विदेशी आकर्षण व पाश्चात्य संस्कृति से बेसुध हुए हमारे देश के नौजवानों की स्थिति को प्रकट किया है तथा यह भी दर्शाया है कि लापरवाह सन्ताने अपने दायित्वों को निभाने मे जरा सी भी दिलचस्पी नही दिखाती है। प्रस्तुत कविता में एक मां अपने लापरवाह व बिगड़ैल संतान से किस प्रकार व्यथित होती है। उसका उदाहरण इस प्रकार हैः–

"बहुत दुखी है रमुआ की मां
फिक्र के कारण दुबली हो गई, काली पड़ गई है।
औलाद जब अच्छी न निकले तो ऐसा ही होता है।
रात के साथ, मां के साथ।"[7]

- **घरों में गिरती रही है बिजलियांः–** प्रस्तुत कविता पुरूष प्रधान समाज द्वारा सदियों से शोषण की चक्की में पिसती, लुटती, पिटती नारी की दायनीय स्थिति का मार्मिक चित्र प्रस्तुत करती हैं। यथाः–

"भ्रूण हत्या से मारी गई है लड़की
पैदा हो भी गई तो
गली में कभी थाली नही बजती।"[8]

इसी प्रकार एक अन्य स्थान पर जग की जननी को क्या–क्या यातनाएं सहनी पड़ती है। इसका सफल उदाहरण इस प्रकार हैंः–

"किसी औरत को बुरी तरह से पीटा है सास ने
तो किसी शराबी ने घर में रखा है पांव
और उसी पांव से धक्के मार गिराया है औरत को
किसी को जलाकर ही मार दिया गया है।
युगों से आसमान से ही नही
घरों में भी गिरती रही है बिजलियां।"[9]

(घ) एक बात पूंछूं काव्य–संग्रह में नारी विमर्शः– प्रस्तुत काव्य–संग्रह कवि की निजी अनुभूतियों का दस्तावेज है। कवि की निजी अनुभूतियां प्राकृतिक उपादानों से मंडित है। उपरौकत काव्य–संग्रह में नारी विमर्श इस प्रकार हैः–

- **न लाया करो–ः** प्रस्तुत कविता डबवाली भीषण अग्निकांड में जल कर मरे पिता की मार्मिक व्यथा है, उसकी करूणामयी अभिव्यक्ति यथा

  "न लाया करो मेरे लिए कोई तोहफा
  तुम से बढ़कर कीमती मेरे लिए
  और कौन सा तोहफा हो सकता है।"[10]

- **विरोधः–** आलोच्य कविता नारी के विद्रोही स्वर को उजागर करती है। वैसे तो नारी ममता, दया, त्याग, सहनशीलता, भावुकता, उदारता, संवेदनशीलता की मूर्ति होती है। लेकिन जब बात उसके अस्मिता की आती है या अस्तित्व की आती है तो वह दुर्गा या काली का रूप धारण करके दुष्टों का विनाश करने की समर्थतता रखती है। प्रस्तुत कविता नारी की इसी स्थिति की और इंगित करती हैः–

  "फिर कभी कभी ऐसा क्यों करती है व्यवहार दूसरों से
  जिसमें कठोरता होती है और होता है
  बहुत होता है भद्दापन
  कहीं नारी को अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए
  ऐसे विरोध का जीवन तो नही जीना पड़ता।"[11]

उपसहांर

इस प्रकार रूपदेवगुण जी ने अपने काव्य में जहां परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए नारी की पीड़ा को स्वर प्रदान किया है। वहीं समाज में नारी की उपयोगिता व महत्व को भी चित्रित किया है। नारी के प्रति कवि का दृष्टिकोण हमेशा से श्रद्धामय रहा है। नारी चाहे मां, हो या पत्नी हो, पुत्री हो, बहन हो या फिर प्रेमिका हो कवि के लिए आदरणीय रही है। क्योंकि विषम परिस्थितियों में भी नारी अपना दायित्व का निर्वाह करती रहती है। परिवार को एकता के सूत्र में बांधे रखती है। उसका स्नेह, वात्सल्य, ममत्व, श्रद्धा भाव ही उसे आत्म–सम्मानी बनाता है। वह परिवार की धूरी होती है। वह अपना सर्वस्व त्याग कर भीपारिवारिक मान–मर्यादाओं का पालन करती है। अतः काव्यकार रूपदेवगुण के काव्य में नारी–विमर्श के अन्तर्गत हमे नारी के विविध रूपों का वर्णन मिलता है।

संदर्भ

1. रूपदेवगुणः तुम झूठ मत बोला करो,पृ. 105
2. रूपदेवगुणः तुम झूठ मत बोला करो,पृ. 105–106

3. रूपदेवगुणः आपके बगैर बहुत उदास है, पृ. 110
4. रूपदेवगुणः तुम अपना रखा करो ख्याल पृ. 12
5. रूपदेवगुणः यह चुप सा रोना पृ. 15—16
6. रूपदेवगुणः बिखर गया है आशियाना, पृ. 18—19
7. रूपदेवगुणः औलाद जब अच्छी न निककले, पृ. 77—78
8. रूपदेवगुणः घरों में गिरती रही है बिजलियां, पृ. 79
9. रूपदेवगुणः घरों में गिरती रही है बिजलियां, पृ. 80
10. रूपदेवगुणः न लाया करो, पृ. 65
11. रूपदेवगुणः विरोध, पृ. 66